फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 20)

क़ुत़्बे आ़लम

की अ़जीब करामत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी मुज़ाकरा नम्बर 9 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा" ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है।

पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह रिसाला **"कुतुबे आ़लम की अ़जीब करामत"** उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं। ...✍

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ॽ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इ़ल्मो ह़िक्मत से मा'मूर मदनी मुज़ाकरात और अपने तरबिय्यत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसलमानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुवे कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले मदनी मुज़ाकरात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त मसलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ो सीरत, साइन्स व त़िब्ब, अख़्लाक़ियात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ाकर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसलमानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **"फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा"** इन मदनी मुज़ाकरात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **"फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा"** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ालआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

5 जुमादिल आख़िर सिने 1438 हिजरी / 05 मार्च 2017

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़ुत्बे आ़लम की अ़जीब करामत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (40 सफ़्ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो क़ौम किसी मजलिस में बैठे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े वोह क़ियामत के दिन जब इस की जज़ा देखेंगे तो उन पर ह़सरत त़ारी होगी, अगर्चे जन्नत में दाख़िल हो जाएं।[1]

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे (वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिद के दाएं कोने में दो मुअ़ल्लक़ तख़्त

सुवाल : मदीनतुल औलिया अह़मदाबाद (हिन्द) में 28, 29, 30 रजबुल मुरज्जब 1418 हिजरी मुत़ाबिक़ 28, 29, 30 नवम्बर सिने 1997 ईसवी को

مدینہ

1 ..... مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۴۸۹، حدیث: ۹۹۷۲ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी का अ़ज़ीमुश्शान तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ हुवा। इस इजतिमाअ़ में शिर्कत के लिये हमारा मदनी क़ाफ़िला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराह 26 रजबुल मुरज्जब बरोज़ बुध बाबुल मदीना (कराची) से बम्बई पहुंचा। एरपोर्ट से सीधे माहिम शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिद मख़दूमे माहिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार पर ह़ाज़िरी दी फिर साह़िले समन्दर पहुंच कर ह़ज़रते क़िब्ला ह़ाजी अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी दी। 27 रजबुल मुरज्जब की सुब्ह़ अह़मदाबाद शरीफ़ के हवाई अड्डे पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शानदार इस्तिक़्बाल हुवा। एरपोर्ट से बराहे रास्त यहां के मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते क़िब्ला सय्यिद शाहे आ़लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दरगाह पर ह़ाज़िरी हुई, मज़ारे पाक से मुल्ह़िक़ा मस्जिद में क़ाफ़िले ने नमाज़े इशराक़ व चाश्त अदा की, मस्जिद के दाएं कोने में दो तख़्त मुअ़ल्लक़ थे उन में जो बड़ा तख़्त था उस के नीचे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बैठ गए। ह़ाज़िरीन भी वहीं जम्अ़ हो गए। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जब दुआ़ करवाना चाही तो शहज़ादए अ़त्तार ह़ज़रते मौलाना अलह़ाज अबू उसैद, उ़बैद रज़ा अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने अ़र्ज़ की, कि दुआ़ से क़ब्ल इन दोनों तख़्तों के बारे में कुछ बता दीजिये।

जवाब : (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इन दोनों तख़्तों के मस्जिद के दाएं कोने में

www.dawateislami.net

मुअ़ल्लक़ होने के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि) ह़ज़रते सय्यिदुना शाहे आ़लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत बड़े आ़लिमे दीन और पाए के वलिय्युल्लाह थे। आप निहायत ही लगन के साथ इ़ल्मे दीन की ता'लीम देते थे। एक बार बीमार हो कर साहिबे फ़िराश हो गए और पढ़ाने की छुट्टियां हो गईं। जिस का आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बेह़द अफ़्सोस था। तक़रीबन चालीस दिन के बा'द सिह़्ह़तयाब हुवे और मद्रसे में तशरीफ़ ला कर ह़स्बे मा'मूल अपने तख़्त पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे। चालीस दिन पहले जहां सबक़ छोड़ा था वहीं से पढ़ाना शुरूअ़ किया। त़लबा ने मुतअ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने येह मज़मून तो बहुत पहले पढ़ा दिया है। गुज़श्ता कल तो आप ने फुलां सबक़ पढ़ाया था ! येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन मुराक़िब हुवे। उसी वक़्त सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लब्हाए मुबारका से मुश्कबार फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए :

"शाहे आ़लम ! तुम्हें अपने अस्बाक़ रह जाने का बहुत अफ़्सोस था लिहाज़ा तुम्हारी जगह तुम्हारी सूरत में तख़्त पर बैठ कर मैं रोज़ाना सबक़ पढ़ा दिया करता था।"

जिस तख़्त पर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हुवा करते थे अब उस पर ह़ज़रते क़िब्ला शाहे आ़लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه किस त़रह़ बैठ सकते थे लिहाज़ा आप फ़ौरन तख़्त पर से उठ गए। तख़्त को यहां मस्जिद में मुअ़ल्लक़ कर दिया गया। इस के बा'द ह़ज़रते शाहे

www.dawateislami.net

आ़लम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये दूसरा तख़्त बनाया गया आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाल के बा'द उस तख़्त को भी यहां मुअ़ल्लक़ कर दिया गया।

यहां दुआ़ करने की वज्ह येह है कि इस मक़ाम पर दुआ़ क़बूल होती है। पीरे त़रीक़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना क़ारी मुह़म्मद मुस्लेहुद्दीन सिद्दीक़ी क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی को मैं ने फ़रमाते सुना है : मुसन्निफ़े बहारे शरीअ़त, सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی के हमराह मुझे अह़मदाबाद शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिद शाहे आ़लम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दरबार में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हुई इन दोनों तख़्तों के नीचे ह़ाज़िर हुवे और अपने अपने दिल की दुआ़एं कर के जब फ़ारिग़ हुवे तो मैं ने अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने क्या दुआ़ मांगी ? फ़रमाया : "हर साल ह़ज नसीब होने की।" मैं समझा ह़ज़रत की दुआ़ का मन्शा येही होगा कि जब तक ज़िन्दा रहूं ह़ज की सआ़दत मिले। लेकिन येह दुआ़ भी ख़ूब क़बूल हुई कि उसी साल ह़ज का क़स्द फ़रमाया। सफ़ीनए मदीना में सुवार होने के लिये अपने वत़न ज़िलअ़ आ'ज़मगढ़ क़स्बा घोसी से बम्बई तशरीफ़ लाए। यहां आप को न्युमोनिया हो गया और सफ़ीने में सुवार होने से क़ब्ल ही आप वफ़ात पा गए।

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की भी नौबत न आई थी सफ़ीने में

www.dawateislami.net

वोह दुआ़ कुछ ऐसी क़बूल हुई कि आप اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक ह़ज का सवाब ह़ासिल करते रहेंगे। खुद सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अपनी मश्हूरे ज़माना किताब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 6 सफ़ह़ा 1034 पर येह ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो ह़ज के लिये निकला और फ़ौत हो गया तो क़ियामत तक उस के लिये ह़ज का सवाब लिखा जाएगा और जो उ़मरह के लिये निकला और फ़ौत हो गया उस के लिये क़ियामत तक उ़मरह करने का सवाब लिखा जाएगा और जो जिहाद में गया और फ़ौत हो गया उस के लिये क़ियामत तक ग़ाज़ी का सवाब लिखा जाएगा।[1]

कुत़्बे आ़लम की अ़जीब करामत

अह़मदाबाद (हिन्द) ही में "वटवा" के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना कुत़्बे आ़लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार पर भी ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल हुवा। वहां ईंटनुमा एक अ़जीबो ग़रीब चीज़ है जिस का बा'ज़ ह़िस्सा पथ्थर, बा'ज़ लोहा, बा'ज़ लकड़ी है जब कि कुछ ह़िस्सा वोह है जिसे आज तक शनाख़्त नहीं किया जा सका। इस ज़िम्न में ह़ज़रते सय्यिदी कुत़्बे आ़लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह करामत मश्हूर है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तहज्जुद के लिये उठे और त़हारत की ग़रज़ से अपने ह़ुजरए मुबारका से बाहर तशरीफ़ लाए अंधेरे में आप का मुबारक पाउं किसी चीज़ से टकराया। आप ने झुक

1 ..... الترغیب والترھیب، کتاب الحج، الترغیب فی الحج والعمرۃ، ۲/۷۹، حدیث: ۱۷۱۸ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

कर उस को टटोलते हुवे फ़रमाया : "**पथ्थर है ! लकड़ी है ! लोहा है ! न जाने क्या है ?**" जहां जहां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का दस्ते मुबारक लगते हुवे जो जो अल्फ़ाज़ ज़बाने अक़्दस से निकले वोह चीज़ वोही बनती गई और जहां हाथ मुबारक रखते हुवे फ़रमाया : "न जाने क्या है ?" वोह हिस्सा ऐसी चीज़ बन गया कि साइन्सदान तजरिबात करने के बा वुजूद भी उस हिस्से को कोई नाम न दे सके। लोग अपनी मुराद ज़ेहन में रखते हुवे दोनों हाथों से उस ईंटनुमा शै को उठाते हैं। कहा जाता है अगर मुराद बर आनी हो तो वोह शै ब आसानी ऊपर तक उठ जाती है वरना नहीं। मैं ने भी उसे ऊपर उठा लिया था और मेरी येह निय्यत थी कि मुझे इस साल ह़ज करना है। चूंकि मैं उसे उठाने में कामयाब रहा इस लिये मैं ने कहा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी साल ह़ज नसीब होगा और ज़ाहिर है ह़ज करना है तो इस से पहले मौत भी नहीं आएगी तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी साल सिने 1418 हिजरी में ह़ज और ज़ियारते मदीनए मुनव्वरा की सआ़दत मिल गई।

तुम्हारे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही

कहा जो दिन को कि शब है तो रात हो के रही

फ़ासिक़े मो'लिन को अ़मलिय्यात की वज्ह से वली कहना कैसा ?

सुवाल : कई आ़मिलीन फ़ासिक़े मो'लिन होते हैं, नमाज़ों की पाबन्दी और जमाअ़त वग़ैरा का एहतिमाम बिल्कुल नहीं करते मगर उन के अ़मलिय्यात से बा'ज़ ला इ़लाज मरीज़ भी सिह़्ह़तयाब हो जाते हैं, जिस

www.dawateislami.net

की वज्ह से लोग उन्हें वली समझने और कहने लगते हैं। क्या उन का ऐसा कहना दुरुस्त है?

जवाब : ला इ़लाज मरीज़ों का इ़लाज कर देने से कोई वली या बुज़ुर्ग नहीं बन जाता, अगर ऐसा हो तो फिर डिस्प्रीन (Disprine) की गोली भी "वली" है! जी हां, दर्दे सर हो तो खाने के बा'द एक या दो टिक्या ले लेने से उ़मूमन आराम हो जाता है। इसी त़रह़ वोह ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर जो न जाने कितने ही मायूस ला इ़लाज मरीज़ों का कामयाब इ़लाज कर देते हैं तो क्या वोह सब "वली" हैं? जी नहीं। शिफ़ा दर अस्ल मिन जानिबिल्लाह है अब इस का सबब कोई डॉक्टर बने या आ़मिल।

क़ुदरत का निज़ाम भी क्या ख़ूब है! "मरीज़ जब दवा इस्ति'माल करता है दवा और मरज़ के दरमियान एक फ़िरिश्ता ह़ाइल हो जाता है जिस की वज्ह से मरीज़ ठीक नहीं हो पाता और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा देना चाहता है तो फ़िरिश्ता ह़ाइल नहीं होता लिहाज़ा दवा मरज़ तक पहुंच जाती है और ब हुक्मे ख़ुदावन्दी शिफ़ा मिल जाती है।"[1] और नाम फिर दवा, डॉक्टर या आ़मिल का हो जाता है। बहर ह़ाल ख़वारिक़ (या'नी ख़िलाफ़े आ़दत बातों) का ज़ुहूर मसलन पानी पर चलना, हवा में उड़ना और किसी जान लेवा बीमारी या परेशानी को दूर कर देना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल होने की अ़लामत नहीं बल्कि क़बूलिय्यत का दारोमदार तो शरीअ़त व सुन्नत को मज़बूती के साथ थामने और इस की मुकम्मल

1 ..... مرقاۃ المفاتیح، کتاب الطب والرقی، ۸/۲۸۹، تحت الحدیث: ۴۵۱۵، ملخصًا دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

पासदारी करने में है चुनान्चे, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 546 पर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ुश्शुयूख़ अबू ह़फ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद सोहरवर्दी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का फ़रमान नक़्ल फ़रमाते हैं : हमारा अ़क़ीदा है कि जिस के लिये और उस के हाथ पर ख़वारिक़े आ़दात (या'नी ख़िलाफ़े आ़दत बातें) ज़ाहिर हों और वोह अह़कामे शरीअ़त का पूरा पाबन्द न हो वोह शख़्स ज़िन्दीक़ (या'नी बे दीन) है और वोह ख़वारिक़ (या'नी ख़िलाफ़े आ़दत या अ़क़्ल में न आने वाली बात) कि उस के हाथ पर ज़ाहिर हों मक्र (धोका) व इस्तिद्राज हैं।[1]

इस क़िस्म की बहुत सी ख़िलाफ़े आ़दत और अ़क़्ल में न आने वाली बातें नमरूद से भी ज़ाहिर हुई हैं चुनान्चे, तफ़्सीरे नईमी में है : नमरूद के ज़माने में तांबे की **एक बस्त़** थी जिस वक़्त कोई जासूस या चोर उस शहर में आता तो उस बस्त़ से आवाज़ निकलती जिस से वोह पकड़ा जाता। **एक नक़्क़ारा** था कि जब किसी की कोई चीज़ गुम हो जाती उस में चोब मारते नक़्क़ारा उस चीज़ का पता देता। **एक आईना** था जिस से ग़ाइब शख़्स का ह़ाल मा'लूम होता था, जब कभी उस आईने में नज़र की वोह ग़ाइब आदमी उस का शहर और क़ियाम गाह उस में नमूदार हो गई। नमरूद के दरवाज़े पर **एक दरख़्त** था जिस के साये में दरबारी लोग बैठते थे जूं जूं आदमी बढ़ते जाते उस का साया फैलता जाता था। एक लाख

1.....बेबाक फ़ुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो ख़िलाफ़े आ़दत बात उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो उस को इस्तिद्राज कहते हैं।

(बहारे शरीअ़त, 1 / 58, ह़िस्सा : 1 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

www.dawateislami.net

आदमी तक साया फेलता रहता था, अगर लाख से एक भी ज़ियादा हो जाता सारे धूप में आ जाते। **एक हौज़** था जिस से मुक़द्दमात का फ़ैसला होता था मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह (दा'वा करने वाला और जिस पर दा'वा किया गया दोनों) बारी बारी उस में घुसते जो सच्चा होता उस के नाफ़ के नीचे पानी रहता था और जो झूटा होता उस में ग़ौता़ खाता था, अगर फ़ौरन तौबा कर लेता तो बच जाता वरना हलाक हो जाता इस क़िस्म की तिलिस्मात (या'नी जादू) पर उस ने दा'वए ख़ुदाई कर दिया था।[1] इस क़िस्म की ख़िलाफ़े आ़दत बातें ज़ाहिर होने से अगर कोई वली बन जाता तो नमरूद भी वली होता लेकिन क़ुरआने करीम ने उसे वली नहीं बल्कि काफ़िर कहा चुनान्चे, पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 258 में इरशादे रब्बुल इ़बाद है :

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَ اُمِیْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۝۲۵۸﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में इस पर कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वोह है कि जिलाता (या'नी ज़िन्दा करता) और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने फ़रमाया तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर (या'नी नमरूद) के और **अल्लाह** राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।

1 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह 1, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 102, 1 / 519 मक्तबए इस्लामिय्या मर्कज़ुल औलिया लाहौर

www.dawateislami.net

वली होने के लिये ईमान व तक़्वा शर्त है

सुवाल : क्या वली होने के लिये करामत शर्त है ?

जवाब : वली होने के लिये करामत शर्त नहीं बल्कि ईमान और तक़्वा शर्त है जैसा कि पारह 11 सूरए यूनुस की आयत नम्बर 63 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "(औलिया) वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।" इसी त़रह़ पारह 9 सूरतुल अनफ़ाल की आयत नम्बर 34 में इरशाद होता है :

﴿اِنْ اَوْلِیَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस के औलिया तो परहेज़गार ही हैं।

इस आयते मुबारका के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : कोई काफ़िर या फ़ासिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली नहीं हो सकता। विलायते इलाही ईमान व तक़्वा से मुयस्सर होती है।[1] मा'लूम हुवा कि वली के लिये करामत का होना शर्त नहीं बे शुमार ऐसे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام गुज़रे हैं जिन से एक करामत भी मन्क़ूल नहीं, अगर किसी ने उन से करामत का मुत़ालबा किया भी तो उन्हों ने आ़जिज़ी व इन्किसारी का मुज़ाहरा करते हुवे अपने आप को गुनाहगार ज़ाहिर फ़रमाया जैसा कि "ह़ज़रते ख़्वाजा शैख़ बहाउल ह़क़्क़े वद्दीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कि सिलसिलए आ़लिया नक़्शबन्दिय्या के इमाम हैं। आप से किसी ने अ़र्ज़ की, कि ह़ज़रत तमाम औलिया से करामतें ज़ाहिर

1 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह 9, अल अनफ़ाल, तह़्तुल आयत : 34, 9 / 543

www.dawateislami.net

होती हैं, हुज़ूर से भी कोई करामत देखें ! फ़रमाया : इस से बड़ी और क्या करामत है कि इतना बड़ा भारी बोझ गुनाहों का सर पर है और ज़मीन में धंस नहीं जाता।"[1]

अलबत्ता जहां ह़ाजत दर पेश हो वहां भी शोहरत या लज़्ज़ते नफ़्स के लिये नहीं बल्कि मुसलमानों के क़ुलूब व ईमान की तक़्वियत और मुशरिकीन व मुन्किरीन को जवाब देने की ग़रज़ से करामत का इज़्हार करते हैं जैसा कि एक बद अ़क़ीदा बादशाह ने एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उन के रुफ़क़ा समेत गरिफ़्तार कर लिया और कहा कि करामत दिखाओ वरना आप को साथियों समेत शहीद कर दिया जाएगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ऊंट की मेंगनियों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि उन्हें उठा लाओ और देखो कि वोह क्या हैं ? जब लोगों ने उन्हें उठा कर देखा तो वोह ख़ालिस सोने के टुकड़े थे। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक ख़ाली पियाले को उठा कर घुमाया और औंधा कर के बादशाह को दिया तो वोह पानी से भरा हुवा था और औंधा होने के बा वुजूद उस में से एक क़त़रा भी पानी नहीं गिरा। येह दो करामतें देख कर बद अ़क़ीदा बादशाह कहने लगा कि येह सब नज़र बन्दी और जादू है। फिर बादशाह ने आग जलाने का हुक्म दिया। जब आग के शो'ले बुलन्द हुवे तो वोह बुज़ुर्ग अपने रुफ़क़ा समेत आग में कूद पड़े और साथ में बादशाह के छोटे से शहज़ादे को भी ले गए, बादशाह अपने बच्चे को आग में जाता देख कर उस के फ़िराक़ में बे चैन हो गया, कुछ देर के

1....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 443, हिस्सा : चहारुम मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

बा'द नन्हे शहज़ादे को इस ह़ाल में बादशाह की गोद में डाल दिया गया कि उस के एक हाथ में सेब और दूसरे हाथ में अनार था। बादशाह ने पूछा : बेटा ! तुम कहां चले गए थे ? तो उस ने कहा : मैं एक बाग़ में था। येह देख कर ज़ालिम व बद अ़क़ीदा बादशाह के दरबारी कहने लगे इस काम की कोई ह़क़ीक़त नहीं येह जादू है। बादशाह ने कहा : अगर तुम येह ज़ह्र का पियाला पी लो तो मैं तुम्हें सच्चा मान लूंगा। उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बार बार ज़ह्र का पियाला पिया, हर मरतबा ज़ह्र के असर से उन के फ़क़त़ कपड़े फटते रहे मगर उन की ज़ात पर ज़ह्र का कोई असर नहीं हुवा।(1)_(2)

करामात का ज़ुहूर ख़ातिमा बिल ईमान के लिये सनद नहीं

सुवाल : क्या करामात दिखाने वाले का ईमान मह़फ़ूज़ हो जाता है ?

जवाब : करामात का ज़ुहूर वली बनने और ख़ातिमा बिल ख़ैर होने के लिये कोई सनद नहीं, बहुत से करामात दिखाने वाले नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर अपने ईमान से भी हाथ धो बैठते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद सावी मालिकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बलअ़म बिन बाऊ़रा को इस्मे आ'ज़म का इ़ल्म था वोह इस के साथ जो भी दुआ़ करता क़बूल होती। उस की रूह़ानियत का येह आ़लम था कि अपनी जगह बैठ कर अ़र्शे आ'ज़म को देख लेता था। उस की दर्सगाह में

---

1 ..... حُجَّةُ اللّٰهِ عَلَى الْعٰلَمِين، ص ٦١٠، مُلَخَّصاً مرکز اھلسنّت برکات رضا ھند

2 ..... मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 36 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "वलिय्युल्लाह की पहचान" का मुत़ालआ़ कीजिये। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

त़ालिबे इ़ल्मों की दवातें बारह हज़ार थीं। (आख़िर कार शैत़ान के बहकावे में आ कर वोह गुमराह हो कर कुफ़्र की मौत मर गया।)[1]

तफ़्सीरे रूहुल बयान में है : बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने बलअ़म बिन बाऊ़रा को इतनी करामतें अ़त़ा फ़रमा कर फिर उस को क्यूं इस का'रे मज़िल्लत (या'नी ज़िल्लत के गढ़े) में गिरा दिया ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : उस ने कभी मेरी ने'मतों का शुक्र अदा नहीं किया। अगर वोह शुक्र गुज़ार होता तो मैं उस की करामतों को सल्ब कर के उस को दोनों जहां में इस त़रह़ ज़लीलो ख़्वार और ख़ाइबो ख़ासिर न करता।[2]

ख़ातिमा बिल ख़ैर हो मेरा मदीने में अगर

बाल बाल उठे पुकार अपना, ख़ुदाया शुक्रिय्या (वसाइले बख़्शिश)

औराद़े अ़त्तारिय्या की मदनी बहार

सुवाल : एक इस्लामी भाई ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में अ़र्ज़ की : मेरे घर में उम्मीद से हैं मगर बच्चा टेढ़ा है डॉक्टर ऑपरेशन का कह रहे हैं, तक्लीफ़ बहुत हो रही है, दुआ़ फ़रमा दीजिये।

जवाब : (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसानी फ़रमाए। घरवालों से कहें कि सूरए इन्शिक़ाक़ की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार, अव्वलो आख़िर तीन मरतबा दुरूद शरीफ़

1 ..... تفسیر صاوی، پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۲/۷۲۷ دار الفکر بیروت

2 ..... روح البیان، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۰، ۳/۱۳۹ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

पढ़ें हर बार शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ें और पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लें। रोज़ाना येह अ़मल करती रहें और वक़्तन फ़ वक़्तन इन आयात का विर्द भी करती रहें। आप भी पानी दम कर के उन्हें दे सकते हैं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा सीधा हो जाएगा। दर्दे ज़ेह के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है।[1] कुछ दिनों के बा'द उन इस्लामी भाई ने बताया कि एक ही दिन इस त़रह़ दम किया हुवा पानी पिलाने से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आराम हो गया, बच्चा भी सीधा हो गया और अब ऑपरेशन का ख़त़रा भी टल चुका है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने मुसलमानों की इस्लाह़ और ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त जहां बे शुमार मजालिस क़ाइम की हैं वहां दुख्यारे और ग़म के मारे इस्लामी भाइयों के लिये एक मजलिस ब नाम "मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या" भी बनाई है जिस के तह़त दुख्यारे मुसलमानों का ता'वीज़ात के ज़रीए़ फ़ी सबीलिल्लाह इलाज किया जाता है। रोज़ाना हज़ारों मुसलमान इस से मुस्तफ़ीज़ होते हैं। ता'वीज़ात के त़लबगार इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाएं और ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते (स्टॉल) से ता'वीज़ात भी ह़ासिल करें।

---

1 .....**मदनी इल्तिजा :** कोई भी विर्द वज़ीफ़ा शुरूअ़ करने से क़ब्ल हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के ईसाले सवाब के लिये कम अज़ कम ग्यारह रूपे की नियाज़ और काम हो जाने की सूरत में कम अज़ कम पच्चीस रूपे की नियाज़ इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम कीजिये। मज़कूरा रक़म से दीनी कुतुबो रसाइल भी ख़रीद कर तक़्सीम किये जा सकते हैं। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

सर या चेहरे पर थप्पड़ मारना कैसा ?

सुवाल : ज़रूरतन किसी को सर या चेहरे पर थप्पड़ वग़ैरा मारना कैसा है ?

जवाब : सर या चेहरे पर थप्पड़ मारने की किसी को भी शरअ़न इजाज़त नहीं। जिन जिन को ब ग़रज़े इस्लाह़ दूसरों को मारने की इजाज़त है तो वोह भी सर या चेहरे पर और ज़र्बे शदीद के साथ नहीं मार सकते। इन्सान तो इन्सान जानवर के सर और चेहरे पर मारने की भी मुमानअ़त है चुनान्चे रद्दुल मोह़तार में है : बिला वज्ह जानवर को न मारे और सर या चेहरे पर किसी ह़ालत में हरगिज़ न मारे कि येह बिल इजमाअ़ (या'नी बिल इत्तिफ़ाक़) नाजाइज़ है। जानवर पर ज़ुल्म करना ज़िम्मी काफ़िर[1] पर ज़ुल्म करने से ज़ियादा बुरा है और ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना मुस्लिम पर ज़ुल्म करने से भी बुरा है क्यूंकि जानवर का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मददगार नहीं उस ग़रीब जानवर को इस ज़ुल्म से कौन बचाए।[2] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ज़ुल्मो सितम से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[3]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1.....**ज़िम्मी :** उस काफ़िर को कहते हैं जिस के जानो माल की ह़िफ़ाज़त का बादशाहे इस्लाम ने जिज़्या के बदले ज़िम्मा लिया हो। (فتاویٰ فیض الرسول، ۱/۵۰۱ شبیر برادرز مرکز الاولیالاہور)

2.....رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، ۹/۶۶۲ دار المعرفہ بیروت

3.....मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले "ज़ुल्म का अन्जाम" का मुत़ालआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ुल्म से बचने का ज़ेहन बनेगा। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

हमेशा हाथ भलाई के वासिते उठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम
करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब (वसाइले बख़्शिश)

वल्दिय्यत तब्दील करने का हुक्म

सुवाल : जो जान बूझ कर अपने आप को अपने वालिद के बजाए किसी और का बेटा बताए, उस के लिये शरअ़न क्या हुक्म है ?

जवाब : अपने ह़क़ीक़ी बाप को छोड़ कर किसी दूसरे को अपना बाप बताना या अपने ख़ानदान व नसब को छोड़ कर किसी दूसरे ख़ानदान से अपना नसब जोड़ना नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है चुनान्चे, नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस शख़्स ने येह जानते हुवे कि फ़ुलां शख़्स मेरा ह़क़ीक़ी बाप नहीं है फिर भी उस की त़रफ़ अपनी निस्बत की तो उस पर जन्नत ह़राम है ।[1] एक और ह़दीसे पाक में इरशाद फ़रमाया : जो कोई अपने बाप के सिवा किसी दूसरे की त़रफ़ अपने आप को मन्सूब करने का दा'वा करे या किसी ग़ैर वाली (या'नी अपने आक़ा के इ़लावा किसी और) की त़रफ़ अपने आप को मन्सूब करे तो उस पर **अल्लाह** तआ़ला, फ़िरिश्तों और सब लोगों की ला'नत है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के क़ियामत के दिन फ़राइज़ और नवाफ़िल क़बूल नहीं फ़रमाएगा ।[2]

---

1 ..... بخاری، کتاب الفرائض، باب من ادعی...الخ، ۴/۳۲۶، حدیث: ۶۷۶۶ دار الکتب العلمیہ بیروت

2 ...مسلم، کتاب العتق، باب تحریم تولی العتیق...الخ، ص ۶۲۳، حدیث: ۳۷۹۴ دار الکتاب العربی بیروت

www.dawateislami.net

शादी कार्ड में क़ब्दन किसी और का नाम बतौ़रे बाप लिखना कैसा ?

सुवाल : मां को त़लाक़ दे देने वाले बाप के बजाए शादी कार्ड वग़ैरा में किसी और का नाम बतौ़रे बाप लिख सकते हैं ?

जवाब : नसब का दारो मदार वल्दिय्यत पर होता है इस लिये हर जगह ह़क़ीक़ी बाप ही का नाम लिखा और बोला जाए। अपने बाप के इ़लावा किसी दूसरे की त़रफ़ बेटा होने की निस्बत करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है लिहाज़ा शादी कार्ड, शनाख़्ती कार्ड और पासपोर्ट वग़ैरा हर जगह ह़क़ीक़ी बाप ही का नाम लिखा और बोला जाए। याद रखिये ! मां को त़लाक़ देने वाले "बाप" से औलाद का रिश्ता ख़त्म नहीं हो जाता, बतौ़रे बाप अब भी उस की ख़िदमत करनी होगी अगर्चे मां नाराज़ होती हो, अगर मां के कहने में आ कर किसी ने बाप की ह़क़ तलफ़ी की तो वोह सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। अगर किसी से ऐसी ग़लती हुई हो तो उसे चाहिये कि तौबा करे और बाप अगर ज़िन्दा हो तो उस से मुआ़फ़ी भी मांगे, अगर बाप का इन्तिक़ाल हो गया हो तो फिर कसरत से उस के लिये इस्तिग़फ़ार और मग़फ़िरत की दुआ़ करे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने वालिदैन का ख़िदमतगार और फ़रमांबरदार बनाए।[1]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुत़ीअ़ अपने मां बाप का कर मैं उन का
हर इक हुक्म लाऊं बजा या इलाही (वसाइले बख़्शिश)

---

1 .....वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करने के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "समुन्दरी गुम्बद" का मुत़ालआ़ कीजिये। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

ले पालक बच्चे की वल्दिय्यत तब्दील करना कैसा ?

सुवाल : ले पालक बच्चे या बच्ची के नाम के साथ परवरिश करने वाले का अपना नाम बतौ़रे वल्दिय्यत बोलना या लिखना कैसा है ?

जवाब : ले पालक बच्चा या बच्ची ले कर उस के ह़क़ीक़ी बाप की जगह परवरिश करने वाले का अपने आप को उस का ह़क़ीक़ी बाप ज़ाहिर करना, लिखना और लिखवाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । परवरिश करने और मुंह बोला बेटा या बेटी कह देने से वोह ह़क़ीक़ी बेटा या बेटी नहीं बन जाते क़ुरआने करीम में इस की मुमानअ़त आई है चुनान्चे, पारह 21 सूरतुल अह़ज़ाब की आयत नम्बर 4 और 5 में इरशाद होता है :

وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ۝ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और न तुम्हारे लिये पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया येह तुम्हारे अपने मुंह का कहना है और* **अल्लाह** *ह़क़ फ़रमाता है और वोही राह दिखाता है । उन्हें इन के बाप ही का कह कर पुकारो येह* **अल्लाह** *के नज़्दीक ज़ियादा ठीक है ।*

याद रखिये ! मुंह बोले भाई बहन, मुंह बोले मां बेटे और मुंह बोले बाप बेटी में भी पर्दा है ह़त्ता कि ले पालक बच्चा जब मर्द व औ़रत के मुआ़मलात समझने लगे तो उस से भी पर्दा है अलबत्ता दूध के रिश्तों में पर्दा नहीं मसलन रज़ाई मां बेटे और रज़ाई भाई बहन में पर्दा नहीं लिहाज़ा ले

www.dawateislami.net

पालक बच्चे को हिजरी सिन के मुताबिक़ दो साल की उ़म्र के अन्दर अन्दर औ़रत अपना या अपनी सगी बहन या सगी बेटी या सगी भान्जी का कम अज़ कम एक बार दूध इस त़रह़ पिला दे कि उस बच्चे के ह़ल्क़ से नीचे उतर जाए। अगर बच्ची गोद लेना हो तो शोहर से रज़ाअ़त का रिश्ता क़ाइम करने के लिये शोहर की बहन या भान्जी या भतीजी का दूध उसे पिला दिया जाए। इस त़रह़ अब जिन जिन से दूध का रिश्ता क़ाइम हुवा उन से पर्दा वाजिब न रहा। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : ब ह़ालते जवानी या एह़तिमाले फ़ितना पर्दा करना ही मुनासिब है क्यूंकि अ़वाम के ख़याल में इस (दूध के रिश्ते) की हैबत बहुत कम होती है।[1] येह याद रहे कि हिजरी सिन के ह़िसाब से दो बरस के बा'द बच्चा या बच्ची को अगर्चे औ़रत का दूध पिलाना ह़राम है। मगर ढाई बरस के अन्दर अगर दूध पिलाएगी तो रज़ाअ़त (या'नी दूध की रिश्तेदारी) साबित हो जाएगी।

बहू का अपने सुसर को "अब्बा जान" कहना कैसा ?

सुवाल : क्या बहू अपने सुसर को "अब्बा जान" कह सकती है ?

जवाब : बहू अपने सुसर को "अब्बा जान" कह सकती है। अगर आ़म लोग भी किसी शख़्स को अपना "ह़क़ीक़ी वालिद" ज़ाहिर न करें सिर्फ़ यूं ही "अब्बा जान" कह कर पुकारें जब भी ह़रज नहीं जैसा कि बा'ज़ उ़म्र रसीदा लोगों को सब "अब्बा जान" कह कर पुकारते हैं तो ऐसों को "अब्बा जान" कह कर मुख़ातिब होने में कोई मुज़ायक़ा नहीं।

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 235, माख़ूज़न रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहौर

www.dawateislami.net

सिर्फ़ मां के सय्यिदा होने से औलाद सय्यिद नहीं होती

सुवाल : जिस का वालिद सय्यिद न हो लेकिन वालिदा सय्यिदा हो तो वोह अपने आप को सय्यिद कह या कहलवा सकता है ?

जवाब : जिस का वालिद सय्यिद न हो अगर्चे वालिदा सय्यिदा हो तो वोह अपने आप को सय्यिद नहीं कह या कहलवा सकता क्यूंकि शरीअ़ते मुत़ह्हरा में नसब (या'नी ख़ानदान का सिलसिला) वालिद से होता है न कि वालिदा से।[1]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **अह़सनुल विआ़इ़ लि आदाबिह्दुआ़** में फ़रमाते हैं : बा'ज़ सूफ़ियाए बे अ़क़्ल जिन का बाप शैख़ या और क़ौम से है, सिर्फ़ मां के सय्यिदानी होने पर सय्यिद बन बैठते हैं और इस बिना पर अपने आप को सय्यिद कहते कहलाते हैं। येह भी मह़ज़ जहालत व मा'सियत और वोही दूसरे बाप को अपना बाप बनाना है। शरए़ मुत़ह्हर में नसब बाप से लिया जाता है न (कि) मां से।[2]

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 198 पर है : जो वाक़ेअ़ में सय्यिद न हो और दीदाह व दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर) सय्यिद बनता हो वोह मलऊ़न (ला'नत किया गया) है, न उस का फ़र्ज़ क़बूल हो न नफ़्ल। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो कोई अपने बाप के

---

1 .....सादाते किराम के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "सादाते किराम की अ़ज़्मत" का मुत़ालआ़ कीजिये। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

2 .....फ़ज़ाइले दुआ़, स. 285 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची।

www.dawateislami.net

सिवा किसी दूसरे की त़रफ़ अपने आप को मन्सूब करने का दा'वा करे या किसी ग़ैर वाली की त़रफ़ अपने आप को पहुंचाए तो उस पर अल्लाह तआ़ला, फ़िरिश्तों और सब लोगों की ला'नत है और अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस के फ़राइज़ और नवाफ़िल क़बूल न फ़रमाएगा।[1]

फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत

सुवाल : "फ़ैज़ाने सुन्नत" के दर्स की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी चाहती है कि हर मुसलमान का येह मदनी मक़्सद बन जाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" इस अ़ज़ीम मदनी मक़्सद में कामयाबी के ह़ुसूल के लिये "फ़ैज़ाने सुन्नत" के दर्स को बुन्यादी अहम्मिय्यत ह़ासिल है कि इस से जहां अपनी इस्लाह़ होती है वहीं दूसरों की इस्लाह़ का भी ख़ूब सामान होता है। अगर किसी के दर्स देने से कोई राहे रास्त पर आ कर हिदायत पा गया तो दर्स देने वाले के भी वारे न्यारे हो जाएंगे चुनान्चे, सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक को भी हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।[2]

مدینہ

1 ...... مسلم، کتاب العتق، بابُ تحریمِ تَوَلِّي الْعَتِیقِ...الخ، ص ۶۲۳، حدیث: ۳۷۹۴

2 ...... مُسلِم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل علی بن أبی طالب، ص ۱۰۰۷، حدیث: ۶۲۲۳

www.dawateislami.net

"फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स देने या सुनने से ख़ैरो भलाई की बातें सीखने और सिखाने का मौक़अ़ मिलता है और ख़ैरो भलाई की बातें सीखने सिखाने वालों की भी क्या ख़ूब शान है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "ऐ मूसा ! भलाई की बातें खुद भी सीखो और लोगों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रौशन फ़रमाऊंगा ताकि उन्हें किसी क़िस्म की वह़्शत न हो।"(1)

"फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स देने से लोगों के अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ होती और उन तक इस्लामी बातें पहुंचती हैं तो येह एक ऐसा अ़मल है जिस पर जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई गई है चुनान्चे, मालिके कौसरो जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो उस के लिये जन्नत है।(2)

"फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स देने से नेकी की दा'वत आ़म होती और बुराइयों का ख़ातिमा होता है और नेकी की दा'वत आ़म करने और बुराइयों से रोकने वालों के लिये अज्रो सवाब के भी क्या कहने ! चुनान्चे,

مدینہ

1 ...... شرح الصدور، باب احادیث الرسول فی عدة امور، ص ۱۵۸ مرکز اهلسنّت گجرات هند

2 ...... حلیة الاولیاء، ابراهیم الهروی، ۱۰/۴۵ حدیث:۱۴۴۶۶

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले एक एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम का अ़ज़ाब देने में मुझे ह़या आती है ।(1)

"**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स देने और सुनने से इ़ल्म में इज़ाफ़ा होता है और येह कम वक़्त में ज़ियादा इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है । आज हमारी अक्सरिय्यत इ़ल्मे दीन से दूर होती जा रही है, बद क़िस्मती से मुसलमानों की अक्सरिय्यत के पास इतना वक़्त नहीं कि वोह किसी मद्रसे या जामिआ़ में दाख़िला ले कर बा क़ाइदा इ़ल्मे दीन ह़ासिल करे, तो ऐसे ह़ालात में "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स देना और सुनना भी ग़नीमत है ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से ख़ुद को बचाने, नेकियों का जज़्बा पाने और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर मस्जिद, घर, दुकान और बाज़ार वग़ैरा

---

1 ..... مُکَاشَفَۃُ القلوب، الباب الخامس عشر فی الأمر بالمعروف...الخ، ص ۴۸ دار الکتب العلمیہ بیروت

2 .....दीनी मदारिस से तअ़ल्लुक़ रखने वालों को भी फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने और सुनने की आ़दत बनानी चाहिये कि इस से जहां मा'लूमात ह़ासिल होती हैं वहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ढेरो ढेर बरकतें भी नसीब होती हैं । (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

जहां जहां सहूलत हो ख़ूब ख़ूब फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दीजिये और सुनिये, येह मदनी इन्आ़मात में से एक मदनी इन्आ़म भी है कि "क्या आज आप ने फ़ैज़ाने सुन्नत से दो दर्स (मस्जिद, घर, दुकान, बाज़ार वग़ैरा जहां सहूलत हो) दिये या सुने ? (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है ।)" इस मदनी इन्आ़म पर अ़मल की बरकत से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ नेकी की दा'वत की धूम मच जाएगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दर्स देने और सुनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इस की बरकतों से माला माल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
सआ़दत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत
की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही (वसाइले बख़्शिश)

फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स से रोकना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ मसाजिद की इन्तिज़ामिया बिग़ैर किसी मा'क़ूल वज्ह के "फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स नहीं देने देती, उन का ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : मसाजिद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का घर हैं जैसा कि पारह 29 सूरतुल जिन्न की आयत नम्बर 18 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और येह कि मस्जिदें अल्लाह ही की हैं।" लिहाज़ा जो शख़्स बिला इजाज़ते शरई मस्जिद की रौनक़ बढ़ाने वाले

www.dawateislami.net

जाइज़ व मुस्तह़्सन काम मसलन मद्रसे और दर्स वग़ैरा से रोकेगा वोह आख़िरत में इस का जवाब देह होगा क्यूंकि मसाजिद बनाई ही इन कामों के लिये जाती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन मह़मूद नस्फ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मसाजिद इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इ़ल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है।(1)

आज के इस पुर फ़ितन दौर में फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने और सुनने की बहुत अशद ज़रूरत है क्यूंकि गुनाहों की यलग़ार, ज़राएए़ इब्लाग़ में फ़ह़्ह़ाशी की भरमार और फ़ैशन परस्ती की फिटकार कई मुसलमानों को बे अ़मल बना चुकी है, नीज़ इ़ल्मे दीन से दूरी और हर ख़ासो आ़म का रुजह़ान सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम की त़रफ़ होने की वज्ह से हर त़रफ़ जहालत ही जहालत है, ला दीनियत व बद मज़्हबियत का सैलाब तबाहियां मचा रहा है, गुलशने इस्लाम पर ख़ज़ां के बादल मन्डला रहे हैं, कितने ही ऐसे नमाज़ी हैं जिन्हें सह़ीह़ मा'नों में नमाज़ पढ़ना नहीं आती, नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद पूरे नहीं करते ह़ालांकि नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद पूरे न करने वाले को ह़दीसे पाक में नमाज़ का चोर फ़रमाया गया है चुनान्चे, ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : लोगों में बद तरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ का चोर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : वोह जो नमाज़ के रुकूअ़ और सजदे पूरे न

---

1 ...... تفسیر نسفی، پ۱۰، التوبہ، تحت الآیۃ:۱۸، ص۴۲۹ دار المعرفہ بیروت

www.dawateislami.net

करे ।[1] ऐसी सूरते ह़ाल में हमें लोगों को ह़िक्मते अ़मली और नर्मी से दर्स की अहम्मिय्यत समझानी चाहिये ।

याद रहे कि मस्जिद में "फ़ैज़ाने सुन्नत" का दर्स देने से जहां लोगों के अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ होती और उन्हें इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने का मौक़अ़ मिलता है वहां मसाजिद भी आबाद होती हैं । येह मस्अला ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि मसाजिद में दर्स से रोकना गोया मसाजिद को वीरान करने की कोशिश करना है और मसाजिद को वीरान करने वालों के लिये पारह 1 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 114 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِیْ خَرَابِهَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके इन में नामे ख़ुदा लिये जाने से और इन की वीरानी में कोशिश करे ।

इस आयते मुबारका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "ज़िक्र" नमाज़, ख़ुत़बा, तस्बीह़, वा'ज़, ना'त शरीफ़ सब को शामिल है और ज़िक्रुल्लाह को मन्अ़ करना हर जगह बुरा है । ख़ास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं । जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र व नमाज़ से मुअ़त्तल कर दे (या'नी मस्जिद में ज़िक्रो अज़्कार और नमाज़ न होने दे तो) वोह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है ।[2] अलबत्ता वोह लोग जो कुरआनो सुन्नत का झांसा (धोका) दे कर मुसलमानों में बद मज़्हबी

1 ..... مُسندِ امام احمد، مسند الأنصار، ۸/۳۸۶، حدیث: ۲۲۷۰۵

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 114 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

फैलाते और उन्हें सीधे रास्ते से हटाते हैं उन्हें मसाजिद में बयान वग़ैरा से रोकना जाइज़ बल्कि ज़रूरी है चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बिलाशुबा उ़लमाए अहले सुन्नत पर इआ़नते सुन्नत (या'नी सुन्नत की ह़िमायत) व इहानते बिदअ़त (या'नी बिदअ़त की तौहीन) तह़रीरन व तक़रीरन ब क़दरे कुदरत फ़र्ज़े अहम व आ'ज़म है और हर मूज़ी (अज़ियत देने वाले) को मस्जिद से निकालना ब शर्ते इस्तिता़अ़त वाजिब, अगर्चे सिर्फ़ ज़बान से ईज़ा (तक्लीफ़) देता हो ख़ुसूसन वोह जिस की ईज़ा मुसलमानों में बद मज़हबी फैलाना और इज़लाल व इग़वा (गुमराह करना और वर्ग़लाना) हो।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन सीखने सिखाने के जज़्बे के तह़्त हर मुसलमान ख़्वाह वोह इमामे मस्जिद हो या मुअज़्ज़िन, मस्जिद की कमेटी के सद्र साह़िब हों या चेरमेन, सेक्रेट्री हों या ख़ज़ानची, डॉक्टर हों या इन्जीनियर अल ग़रज़ दीनी व दुन्यवी किसी भी शो'बे से वाबस्ता हो उसे अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाना चाहिये कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ।" इस अ़ज़ीम मदनी मक़्सद के ह़ुसूल में कामयाबी पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना और सुनना भी है लिहाज़ा जो इस्लामी भाई दर्स दे सकते हैं वोह अपनी मसाजिद और घरों में दर्स दे कर और जो नहीं दे सकते वोह दर्स में शामिल हो कर ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत को आ़म कर के इस की बरकतें लूटने की कोशिश करें। मसाजिद में दर्स देने और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाने वालों को चाहिये कि अपनी आवाज़ इतनी बुलन्द न करें जिस से दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को तश्वीश हो और न ही नमाज़ियों

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 14 / 595

www.dawateislami.net

के चेहरे की सीध में दर्स दें। इसी त़रह़ रात बहुत देर तक मद्रसे के नाम पर मस्जिद में बैठे रहने, हंसी मज़ाक़ करने, लाइटों और पंखों का बेजा इस्ति'माल करने, मोबाइल फ़ोन Charge करने, बिला इजाज़ते शरई कमेटी और इमाम व मुअज़्ज़िन साहिबान के ख़िलाफ़ गुफ़्तगू करने से सख़्ती से परहेज़ करें। हमें दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के ज़रीए नेकी की दा'वत आ़म करनी है तो येह अ़ज़ीम मदनी काम शरीअ़त व ह़िक्मत के दाइरे में रह कर होना चाहिये। ऐसी भी मसाजिद हैं कि जिन में पहले दर्स देने और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाने की इजाज़त नहीं थी मगर इस्लामी भाइयों की मह़ब्बत भरी इनफ़िरादी कोशिशों से दर्स देने, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाने और मदनी क़ाफ़िले ठहराने की भी इजाज़त मिल गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मसाजिद आबाद करने वाला बनाए और हर उस काम से बचाए जो मसाजिद की वीरानी का सबब बने। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दर्स से रोकने वालों को कैसे राज़ी किया जाए?

सुवाल : "फ़ैज़ाने सुन्नत" के दर्स से रोकने वालों को कैसे राज़ी किया जाए?

जवाब : "फ़ैज़ाने सुन्नत" के दर्स से रोकने वालों को दर्स की अहम्मिय्यत और इस के फ़वाइद व बरकात बता कर ह़िक्मते अ़मली और नर्मी के साथ समझाने की कोशिश की जाए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा जैसा कि पारह 27 सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 55 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ۝۵۵﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।

दर्स से रोकने वालों का यूं ज़ेहन बनाया जाए कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने से भलाई फैलती और बुराई मिटती है आप मस्जिद में

www.dawateislami.net

दर्स शुरूअ़ करवा कर भलाई फैलाने और बुराई मिटाने का ज़रीआ़ बनें कि ऐसे लोगों को ह़दीसे पाक में मुबारक बाद से नवाज़ा गया है चुनान्चे, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो भलाई के फैलने और बुराई को रोकने का ज़रीआ़ होते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बुराई फैलने और भलाई में रुकावट का ज़रीआ़ होते हैं मुबारक हैं वोह लोग जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ैर के फैलने का ज़रीआ़ बनाया।[1] बहर ह़ाल आप के समझाने और दर्स के फ़ज़ाइलो बरकात बताने के बा वुजूद भी इजाज़त न मिले तो मस्जिद की बा असर शख़्सियात से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की इजाज़त दिलवाने की तरकीब बनाई जाए। अगर फिर भी काम न बने तो बह़्सो मुबाह़सा करने के बजाए सब्र से काम लीजिये और पांचों नमाज़ें मुमकिना सूरत में उसी मस्जिद में अदा कीजिये और नमाज़ों के बा'द कमीटी के अराकीन और दीगर नमाज़ियों से ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी न कभी राह ज़रूर हमवार हो जाएगी।

ख़जूर से रोज़ा इफ़्तार करने में ह़िक्मत

सुवाल : ख़जूर से रोज़ा इफ़्तार करने में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : ख़जूर से रोज़ा इफ़्तार करना सुन्नत है और सुन्नत में यक़ीनन ह़िक्मत ही ह़िक्मत है अगर्चे हमें इस के बारे में इ़ल्म न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से पहले तर ख़जूरों से रोज़ा इफ़्तार फ़रमाते, तर ख़जूरें न होतीं तो चन्द ख़ुश्क ख़जूरों (या'नी छुवारों) से और येह भी न होतीं

1 ..... ابنِ ماجه، کتاب السنة، باب من کان مفتاحا للخیر، ۱/۱۵۵، حدیث: ۲۳۷ دار المعرفه بیروت

www.dawateislami.net

तो चन्द चुल्लू पानी पीते।[1] लिहाज़ा जब भी रोज़ा इफ़्तार करें तो इस सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से तर खजूर से रोज़ा इफ़्तार करें, येह न हो तो छुवारे से, येह भी मौजूद न हो तो फिर पानी से रोज़ा इफ़्तार कर लें कि येह हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत है।

खजूर से रोज़ा इफ़्तार करने में एक ह़िक्मत येह है कि खजूर मीठी होती है और ख़ाली पेट मीठी चीज़ खाना सिह़्ह़त के लिये ख़ुसूसन नज़र के लिये मुफ़ीद है।

खजूर से रोज़ा इफ़्तार करने में एक ह़िक्मत येह भी है कि रोज़े में चूंकि दिन भर पेट ख़ाली होता है जिस की वज्ह से रोज़ादार को कमज़ोरी मह़सूस होती है तो इफ़्तार के वक़्त उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूंकि येह ग़िज़ाइय्यत से भरपूर है। इस के खाने से जल्द तवानाई बह़ाल हो जाती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जैसे ही सूरज ग़ुरूब होने का यक़ीन हो जाए तो फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये मगर खजूर या छुवारा या पानी से इफ़्तार करना सुन्नत है। इफ़्तार के बा'द दुआ भी ज़रूर मांगिये कि येह सुन्नत है और इस की बड़ी फ़ज़ीलत आई है जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से फ़रमाया : ऐ अ़ली ! जब तू माहे रमज़ान में रोज़ादार हो तो इफ़्तार के बा'द यूं दुआ कर :

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तुझ पर भरोसा किया और तेरे दिये हुवे रिज़्क़ से इफ़्तार किया।"

1 ..... ابوداود، کتاب الصوم، باب مایفطر علیہ، ۲/۴۴۷، حدیث: ۲۳۵۶ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

يُكْتَبُ لَكَ مِثْلُ مَنْ كَانَ صَائِمًا مِنْ غَيْرِ اَنْ يَنْقُصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْءٌ

"तो तेरे लिये तमाम रोज़ादारों की मिस्ल अज्र लिखा जाएगा और उन के अज्र में भी कुछ कमी न होगी।"(1)

"ह़लीम" को "खिचड़ा" कहने की वज्ह

सुवाल : एक मश्हूर खाना जिसे "ह़लीम" कहा जाता है, मगर बा'ज़ लोग इसे "खिचड़ा" कहते हैं और दूसरों को भी इसे "खिचड़ा" कहने की तरग़ीब दिलाते हैं, इस में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : "खिचड़े" को "ह़लीम" कहना भी जाइज़ है मगर चूंकि "ह़लीम" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक सिफ़ाती नाम है इस लिये खाने की चीज़ के लिये येह लफ़्ज़ इस्ति'माल नहीं करना चाहिये। इस ग़िज़ा को उर्दू में "खिचड़ा" भी कहते हैं लिहाज़ा इस के लिये येही लफ़्ज़ इस्ति'माल किया जाए। बा'ज़ औक़ात किसी दुन्यवी शै पर मुतबर्रिक अल्फ़ाज़ न बोलना भी अदब होता है, इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिये चुनान्चे, तज़्किरतुल औलिया में है : ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی ने एक बार सुर्ख़ रंग का सेब हाथ में ले कर फ़रमाया : येह तो बहुत ही "लत़ीफ़" है। ग़ैब से आवाज़ आई : हमारा नाम सेब के लिये इस्ति'माल करते हुवे ह़या नहीं आई ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चालीस दिन के लिये अपनी याद उन के दिल से निकाल दी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी क़सम खाई कि अब कभी बिस्त़ाम का फल नहीं खाऊंगा।(2)

---

1 ...... مسند الحارث، كتاب الوصايا، باب وصية سيدنا رسول الله صلَّى الله عليه وسلم، ۱/۵۲۶، حديث: ۳۶۹ مركز خدمة السنة والسيرة النبوية–المدينة المنورة

2 ...... تذكرةُ الاوليا، باب چهاردهم، ذكر بايزيد بسطامى، ص ۱۳۴ إنتشارات گنجينه تهران

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि "लत़ीफ़" का एक लफ़्ज़ी मा'ना "उ़म्दा" है मगर चूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम भी है इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي को तम्बीह की गई तो इसी त़रह़ "ह़लीम" भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है लिहाज़ा इसे "खिचड़े" के लिये इस्ति'माल न किया जाए। जितना ज़ियादा अदब करेंगे उतनी ही ज़ियादा बरकतें नसीब होंगी। बहर ह़ाल अगर किसी ने इस ग़िज़ा को ह़लीम कहा तो उसे गुनाहगार नहीं कहा जाएगा, ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي को उन के मन्सबे विलायत की वज्ह से तम्बीह फ़रमाई गई थी।

जो है बा अदब वोह बड़ा बा नसीब और
जो है बे अदब वोह निहायत बुरा है (वसाइले बख़्शिश)

तफ़रीह़न शिकार करना कैसा ?

सुवाल : क्या शिकार करना सुन्नत है ? नीज़ तफ़रीह़न शिकार करना कैसा है ?

जवाब : शिकार अगर ग़िज़ा या दवा या तिजारत की ग़रज़ के लिये किया जाए तो येह जाइज़ है जब कि बत़ौरे तफ़रीह़ शिकार करना ह़राम है। ह़दीसे पाक में है : जो शिकार के पीछे रहा वोह ग़ाफ़िल हो गया।[1] इस ह़दीसे पाक के तह़त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी जो शिकार का शग़ल अपना वत़ीरा बना ले कि मह़ज़ शौक़िय्या शिकार खेलता रहे वोह **अल्लाह** के ज़िक्र, नमाज़ व जमाअ़त, जुमुआ़, रिक़्क़ते क़ल्ब से मह़रूम रहता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी शिकार न किया। बा'ज़ सह़ाबा ने शिकार किया है मगर शिकार करना और है और शिकार का मश्ग़ला वोह भी मह़ज़

مدینہ

1 ..... مشکاۃ المصابیح، کتاب الامارۃ والقضاء، الفصل الثانی، ۹/۲، حدیث: ۳۷۰۱ دار الکتب العلمیہ بیروت

www.dawateislami.net

शौक़िय्या कुछ और, शिकार का ज़िक्र तो क़ुरआने करीम में है यहां मश्ग़लए शौक़िय्या का ज़िक्र है लिहाज़ा येह ह़दीस हुक्मे क़ुरआन के ख़िलाफ़ नहीं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक और इस की शर्ह़ से मा'लूम हुवा कि न तो शिकार करना सुन्नत है और न ही तफ़रीह़न शिकार करने की इजाज़त। बहर ह़ाल अगर किसी ने तफ़रीह़न शिकार किया तो उस का येह फ़े'ल (या'नी शिकार करना) ह़राम है मगर जो मछली या ह़लाल जानवर जिस का शिकार किया गया उसे खाना ह़लाल है जैसा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : किसी जानवर का शिकार अगर ग़िज़ा या दवा या दफ़्ए़ ईज़ा या तिजारत की ग़रज़ से हो जाइज़ है और जो तफ़रीह़ के लिये हो जिस त़रह़ आज कल राइज है और इसी लिये इसे शिकार खेलना कहते और खेल समझते हैं और वोह जो अपने खाने के लिये बाज़ार से कोई चीज़ ख़रीद कर लाना आ़र जानें, धूप और लू में ख़ाक उड़ाते (या'नी आवारा फिरते) हैं, येह मुत़लक़न ह़राम है। रही शिकार की हुई मछली इस का खाना हर त़रह़ ह़लाल है अगर्चे फ़े'ले शिकार इन नाजाइज़ सूरतों से हुवा हो।[2]

क्या सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मेहंदी लगाई ?

सुवाल : मेहंदी लगाना क़ौली सुन्नत है तो क्या सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक बालों में कभी भी मेहंदी नहीं लगाई ?

जवाब : मेहंदी लगाने की ज़रूरत उस वक़्त पड़ती है जब बाल सफ़ेद हों जब कि "बुख़ारी शरीफ़" की रिवायत के मुत़ाबिक़ हमारे प्यारे आक़ा,

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 361 ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहौर
2 .....फ़तावा रज़विय्या, 20 / 343 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक और सरे अक़्दस में बीस बाल भी सफ़ेद न थे।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दाढ़ी शरीफ़ में कभी ख़िज़ाब न किया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल ख़िज़ाब की ह़द तक सफ़ेद न हुवे सिर्फ़ चन्द बाल शरीफ़ सफ़ेद थे, चन्द बार सर शरीफ़ में मेहंदी लगाई थी दर्दे सर की वज्ह से।[2]

सब से पहले मेहंदी किस ने लगाई ?

सुवाल : सब से पहले मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब किस ने किया ? नीज़ सियाह ख़िज़ाब किस ने शुरूअ़ किया ?

जवाब : सब से पहले मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने किया जब कि सियाह ख़िज़ाब सब से पहले फ़िरऔ़न ने किया जैसा कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से पहले मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने किया और सब से पहले सियाह ख़िज़ाब फ़िरऔ़न ने किया।[3]

सफ़ेद दाढ़ी में मेहंदी लगाने की फ़ज़ीलत

सुवाल : क्या सफ़ेद दाढ़ी में मेहंदी लगाने की भी कोई फ़ज़ीलत है ?

जवाब : जी हां। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस

---

1 ..... بخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۲/۴۸۷، حدیث: ۳۵۴۸

2 .....Mirआतुल मनाजीह़, 6 / 150

3 .....فردوس الاخبار، باب الألف، ۱/۳۵، حدیث: ۴۷ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है : जो शख़्स इस ह़ालत में फ़ौत हुवा कि उस ने (काले ख़िज़ाब के इ़लावा मसलन लाल या ज़र्द मेहंदी का) ख़िज़ाब किया हुवा था, मुन्कर, नकीर उस से क़ब्र में सुवाल नहीं करेंगे, मुन्कर कहेगा : ऐ नकीर ! इस से सुवाल करो। नकीर जवाब देगा कि मैं इस से कैसे सुवाल करूं ह़ालांकि इस के चेहरे पर इस्लाम का नूर है।[1]

ख़ुशी के मौक़अ़ पर मर्द का हाथों में मेहंदी लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या ईद या शादी वग़ैरा ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर मर्द अपने हाथों में मेहंदी लगा सकते हैं ?

जवाब : मर्द ईद या शादी वग़ैरा ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर भी अपने हाथों में मेहंदी नहीं लगा सकते क्यूंकि मेहंदी लगाने से औ़रतों से मुशाबहत होती है और औ़रतों की मुशाबहत इख़्तियार करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ह़दीसे पाक में है कि बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में एक मुख़न्नस को ह़ाज़िर किया गया जिस ने अपने हाथ पाउं मेहंदी से रंगे हुवे थे। इरशाद फ़रमाया : इस का क्या ह़ाल है ? (या'नी इस ने मेहंदी क्यूं लगाई है ?) लोगों ने अ़र्ज़ की : येह औ़रतों से मुशाबहत करता है। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : इसे शहर बदर कर दो लिहाज़ा उस को शहर बदर कर दिया गया, मदीने से निकाल कर नक़ीअ़[2] को भेज दिया गया।[3]

---

1 ... شرح الصدور، باب من لا یسئل فی القبر، ص ۱۵۲ مرکز اھل سنّت برکات رضا ھند

2 ..... "नक़ीअ़" मदीनए मुनव्वरा के बाहर एक जंगल है जहां अहले मदीना के जानवर चरा करते थे। उस मुख़न्नस को इस लिये निकाल दिया ताकि अहले मदीना उस की सोह़बत से बचें और उसे इ़ब्रत हो और तौबा करे और फिर वापस आ जाए। येह मत़लब नहीं कि उसे इस ह़रकत से मन्अ़ नहीं फ़रमाया गया येह निकालना अ़मली मुमानअ़त है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 187)

3 ... ابوداود، کتاب الادب، باب فی الْمُخَنَّثِین، ۴/۳۶۸، حدیث: ۴۹۲۸

www.dawateislami.net

मर्द तो मर्द छोटे बच्चों को भी मेहंदी लगाने की मुमानअ़त है लिहाज़ा वालिदैन को चाहिये कि वोह अपने छोटे बच्चों के हाथ पाउं मेहंदी से न रंगें कि फ़तावा आ़लमगीरी में है : बिला ज़रूरत छोटे बच्चों के हाथ पाउं में मेहंदी नहीं लगानी चाहिये, औ़रतों को हाथ पाउं में मेहंदी लगाना जाइज़ है।[1] हां बच्चियों के हाथ पाउं में मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं जैसा कि सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : लड़कियों के हाथ पाउं में (मेहंदी) लगा सकते हैं जिस त़रह़ इन को ज़ेवर पहना सकते हैं।[2]

बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू नहीं टूटता

सुवाल : क्या बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब : बच्चे को दूध पिलाना नवाक़िज़े वुज़ू (या'नी वोह चीज़ें जो वुज़ू को तोड़ देती हैं उन) में से नहीं लिहाज़ा बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू नहीं टूटता।

रिज़्क़ में बरकत का वज़ीफ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" के सफ़ह़ा 128 पर है : एक सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ख़िदमते अक़्दस (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : दुन्या ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया : क्या वोह तस्बीह़ तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है मलाइका की और जिस की बरकत से रोज़ी दी जाती है। ख़ल्क़े दुन्या आएगी तेरे पास ज़लीलो ख़्वार हो कर, तुलुए़ फ़ज्र के साथ सौ बार कहा कर

سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَ بِحَمْدِہٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सात दिन गुज़रे थे कि ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! दुन्या मेरे पास इस कसरत से आई, मैं ह़ैरान हूं कहां उठाऊं कहां रखूं !

(لسان المیزان، حرف العین، ۴/۳۰۴، حدیث: ۵۱۰۰، زرقانی علی المواھب، ذکر طبہ صلی اللہ علیہ وسلم من داء الفقر، ۹/۴۲۸ واللفظ لہ)

---

1 .... فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب العشرون فی الزینۃ...الخ، ۵/۳۵۹ دار الفکر بیروت

2 ....बहारे शरीअ़त, 3 / 596, ह़िस्सा : 16 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	सिर्फ़ मां के सय्यिदा होने से औलाद	
मस्जिद के दाएं कोने में दो मुअ़ल्लक़ तख़्त	2	सय्यिद नहीं होती	21
कुत्बे आ़लम की अ़जीब करामत	6	फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की अहम्मिय्यत	
फ़ासिक़े मो'लिन को अ़मलिय्यात की वज्ह		व फ़ज़ीलत	22
से वली कहना कैसा ?	7	फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स से रोकना कैसा ?	25
वली होने के लिये ईमान व तक़्वा शर्त़ है	11	दर्स से रोकने वालों को कैसे राज़ी किया जाए ?	29
करामात का ज़ुहूर ख़ातिमा बिल ईमान के		खजूर से रोज़ा इफ़्तार करने में हिक्मत	30
लिये सनद नहीं	13	"ह़लीम" को "खिचड़ा" कहने की वज्ह	32
औरादे अ़त्तारिय्या की मदनी बहार	14	तफ़रीह़न शिकार करना कैसा ?	33
सर या चेहरे पर थप्पड़ मारना कैसा ?	16	क्या सरकार ﷺ ने मेहंदी लगाई ?	34
वल्दिय्यत तब्दील करने का हुक्म	17	सब से पहले मेहंदी किस ने लगाई ?	35
शादी कार्ड में क़स्दन किसी और का नाम		सफ़ेद दाढ़ी में मेहंदी लगाने की फ़ज़ीलत	35
बत़ौरे बाप लिखना कैसा ?	18	ख़ुशी के मौक़अ़ पर मर्द का हाथों में मेहंदी	
ले पालक बच्चे की वल्दिय्यत तब्दील करना कैसा ?	19	लगाना कैसा ?	36
बहू का अपने सुसर को "अब्बा जान"		बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत का वुज़ू	
कहना कैसा ?	20	नहीं टूटता	37

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN
0133012

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net